कुछ करने से पहले ये सोचे कि आप यह कर सकते है।
– अज्ञात

बंटने का गंभीर संकेत

आयोजकों के इस स्पष्टीकरण को औपचारिकता ही समझना ठीक रहेगा कि यह नया ब्लॉक बनाने या ओआईसी से प्रतिद्वंद्विता का मामला नहीं है। सच्चाई यही है कि यह बैठक इस्लामी देशों के बीच से उभरते एक नए समीकरण को आकार देने की कोशिश है।

मनोज जोशी

मलयेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में 18 से 21 दिसंबर के बीच हुई मुस्लिम देशों की बैठक इस्लामी दुनिया के दो धड़ों में बंटने का गंभीर संकेत देती है। यह पहला मौका है जब सऊदी अरब के ऐतराज के बावजूद ओआईसी के मंच से अलग कुआलालंपुर बैठक बुलाकर दुनिया की मुस्लिम आवाम की साझा चिंताओं को आवाज देने का दावा किया गया है। आयोजकों के इस स्पष्टीकरण को औपचारिकता ही समझना ठीक रहेगा कि यह नया ब्लॉक बनाने या ओआईसी से प्रतिद्वंद्विता का मामला नहीं है। सच्चाई यही है कि यह बैठक इस्लामी देशों के बीच से उभरते एक नए समीकरण को आकार देने की कोशिश है।

सऊदी अरब इसे खुले तौर पर अपने आधिपत्य को चुनौती के रूप ले रहा है। यही वजह है कि इस बैठक को लेकर शुरू से ही उत्साह जता रहे पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान ने सऊदी अरब यात्रा के बाद आखिरी पलों में इससे दूर रहने का फैसला कर लिया। पहले विश्वयुद्ध के खात्मे के साथ ही खत्म हुई खिलाफत के लंबे दौर में इस्लामी जगत की धुरी रहे तुर्की के लिए दोबारा वही हैसियत हासिल करने की इच्छा अस्वाभाविक नहीं है।

इस्लाम के अगुआ के तौर पर तुर्की की जगह लेने वाले सऊदी अरब के शासकों ने 1978 में हुई ईरान की इस्लामी क्रांति के डर से कट्टरपंथी वहाबी इस्लाम को खूब बढ़ावा दिया और इस काम में कम्युनिज्म विरोध के नाम पर अमेरिका का खुला समर्थन भी उसे प्राप्त हुआ। लेकिन अफगानिस्तान से सोवियत फौजों की वापसी और फिर अमेरिका समेत तमाम देशों के खिलाफ अलकायदा के आतंकी हमलों ने सऊदी अरब को कट्टर इस्लाम से दूरी बनाने को मजबूर कर दिया।

उसके साथ सबसे बड़ी मजबूरी तेल के धंधे को लेकर जुड़ी है, जिसके चलते पाकिस्तान की लाख जिद के बावजूद सऊदी अरब ने अनुच्छेद 370 के मसले पर भारत के खिलाफ कोई बयान जारी नहीं किया। शिया बहुल देश ईरान की इस्लामी विश्व की कमान संभालने में खास दिलचस्पी नहीं हो सकती, लेकिन अगर विरोधी ब्लॉक बनाने से मुस्लिम देशों के बीच सऊदी अरब की पकड़ कुछ ढीली पड़ती है तो उसके लिए सौदा बुरा नहीं कहा जाएगा। कुल मिलाकर देखें तो यह धारणा बनाने में कई देशों की दिलचस्पी है कि सऊदी अरब की अगुआई में ओआईसी के मंच से मुस्लिम उम्मा के मुद्दे मजबूती से नहीं उठाए जा सकते। साफ है कि इस नए मंच का इस्तेमाल ऐसे मुद्दों को ज्यादा आक्रामक अंदाज में उठाने के लिए किया जाएगा।

हालांकि तुर्की, ईरान, कतर और मलयेशिया की आर्थिक हैसियत ऐसी नहीं है कि ये अपनी एक भी बात किसी मुल्क से जबरदस्ती मनवा सकें। बहरहाल, इस्लामी देशों का यह घटनाक्रम कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है और हमारे राजनयिकों को जल्दी इससे निपटने की तैयारी कर लेनी चाहिए।

असहिष्णु धर्म

धर्म-दर्शन

मनमोहन। इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि विश्व का सबसे असहिष्णु धर्म इस्लाम ही है. सभी मुसलमान कट्टर यदि ना हों तो भी यह आपको मानना ही होगा कि हिन्दुओं की तरह अपने धर्म की खुलेआम आलोचना, धर्मगुरुओं की सरेआम बेइज्जती तथा दूसरे धर्मस्थानों पर नियमित या अनियमित उपासना करना नहीं ही करते। 80 प्रतिशत या अधिक हिन्दू ऐसे होंगे जो संस्कृत बिल्कुल ही नहीं जानते होंगे। जानना तो दूर, संस्कृत पढने वाले और पूजा–पाठ करने वाले विप्र को हेयदृष्टि से देखते हैं लोग. एक मैसेज में पढ़ा था दृ ईसाई अंग्रेजी जानते हैं, बाइबल पढ़ते हैंय मुस्लिम उर्दू, अरबी जानते हैं और कुरान पढ़ते हैंय सिख गुरबानी जानते हैं और गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ते हैंय मगर हिन्दू संस्कृत जानते ही नहीं, वेद–पुराण–गीता–रामायण पढ नहीं सकते और गलत सलत अनुवाद कर के धर्म का उपहास करते हैं, आलोचना करते हैं. विडंबना ही है।

संपादकीय

सबसे बड़े लोकतंत्र

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के चुनाव को हमेशा उत्सुकता से देखा जाता रहा है, लेकिन इस बार मामला कुछ ज्यादा खास है। भारतीय चुनावों में अमेरिका, इंग्लैंड और विभिन्न यूरोपीय देशों की ज्यादा दिलचस्पी देखी गई है। लेकिन इस बार दक्षिण–पूर्वी एशिया और खाड़ी इलाके के कई देश इसमें काफी रुचि ले रहे हैं। उन्होंने भारत में नियुक्त अपने राजनयिकों को इस काम में लगाया है, जो अपनी कूटनीतिक सीमाओं में रहते हुए चुनावों के विभिन्न कारकों को समझने का प्रयास कर रहे हैं। जैसे, एक युवा राजनयिक को यह जिम्मेदारी दी गई कि वह यूपी के वोटिंग पैटर्न को समझे। सबकी बड़ी जिज्ञासा चुनावों में जाति की भूमिका को लेकर है। वे जानना चाहते हैं कि जाति जैसी पुरानी सामाजिक संरचना भारत जैसी तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था और आधुनिक जीवन मूल्यों वाले समाज में आखिर किस तरह अपनी निर्णायक उपस्थिति बनाए हुए है।

भारतीय समाज और इसके राजनीतिक ढांचे के बीच मौजूद विरोधाभास को डॉ. बी आर आंबेडकर ने स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही पहचान लिया था। संविधान के लोकार्पण से ठीक पहले दिए गए अपने वक्तव्य में उन्होंने साफ कहा था कि भारत ने राजनीतिक रूप से लोकतंत्र जरूर अपना लिया है। लेकिन समाज में लोकतंत्र आना आसान नहीं है क्योंकि सामाजिक पदानुक्रम (हायरार्की) आसानी से नहीं बदलने वाली। भारत की जमीन में जाति के पाये आखिर इतनी मजबूती से क्यों धंसे हुए हैं, इस बारे में समाजशास्त्री किसी अंतिम निष्कर्ष तक नहीं पहुंच पाए हैं। आजादी के बाद कई संगठनों और नेताओं ने जाति तोड़ो आंदोलन चलाया पर सतह के नीचे उसका कोई खास असर नहीं हुआ। उस समय माना जा रहा था कि आर्थिक विकास के साथ यह पहचान अपने आप कमजोर पड़ती जाएगी।

आस्ट्रेलिया के पैट कमिंस इस सीजन के सबसे महंगे खिलाड़ी बने। इस पेसर को कोलकाता नाइटराइडर्स ने 15 करोड़ 50 लाख की बड़ी राशि में खरीदा। आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बन गए।

कौन सबसे महंगा बिकेगा

आरती वर्मा

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2020 के लिए खिलाड़ियों की नीलामी गुरुवार को खत्म हो गई। आईपीएल के रोमांच का एक हिस्सा इसमें होने वाली खिलाड़ियों की नीलामी का भी है। कई दिन पहले से कयास लगने शुरू हो जाते हैं कि इस बार कौन सबसे महंगा बिकेगा या कौन सा अनाम खिलाड़ी अपनी ऊंची कीमत से सबको चौंका देगा। ऑस्ट्रेलिया के पैट कमिंस इस सीजन के सबसे महंगे खिलाड़ी बने। इस पेसर को कोलकाता नाइटराइडर्स ने 15 करोड़ 50 लाख की बड़ी राशि में खरीदा। इस तरह वह आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बन गए।

उन्हें ज्यादा से ज्यादा दाम देकर खरीदने के पीछे कोलकाता नाइटराइडर्स का मकसद अपने बोलिंग अटैक को मजबूत बनाना है, हालांकि भारतीय परिस्थितियों में पेस बोलिंग हर बार कारगर नहीं रहती। शायद इसीलिए टीम के पूर्व कप्तान गौतम गंभीर ने कहा कि टीम को ऊंचा दांव ऑलराउंडर पर लगाना चाहिए था। वैसे बोलिंग पर पैसे चेन्नई सुपरकिंग्स ने भी खूब लगाए। उसने काफी ऊंची बोली देकर पीयूष चावला को खरीदा। पिछले कुछ वर्षों से आईपीएल

टीम इंडिया के संभावित खिलाड़ियों के लिए लॉचिंग पैड बन गया है। इस बार 2020 के टी–20 वर्ल्ड कप को देखते हुए इसका महत्व और बढ़ गया है। सबसे ज्यादा ध्यान युवा गेंदबाजों पर रखना होगा क्योंकि टीम के कई बोलर्स अभी चोट से उबर रहे हैं।

भारतीय बल्लेबाजी का मध्यक्रम भी चिंता का विषय रहा है, जिसे युवा खिलाड़ियों से ही भरना ठीक रहेगा। आईपीएल में हर साल कुछ ऐसे युवा सामने आते हैं, जिनकी चमक अलग से दिखती है। इस मामले में भारतीय अंडर–19 टीम के सदस्य यशस्वी जायसवाल का नाम लिया जा सकता है जिन्हें राजस्थान रॉयल्स ने 2 करोड़ 40 लाख में खरीदा। उन्हें अपने पाले में लाने के लिए मुंबई इंडियंस और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच कड़ी टक्कर हुई और आखिर में वे राजस्थान के हिस्से गए। यूपी के भदोही जिले के रहने वाले यशस्वी 2011 में अपने चाचा के पास मुंबई आए थे, जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी।

जीवनयापन और क्रिकेट का शौक पूरा करने के लिए यशस्वी को गोलगप्पे बेचने पड़े। कुछ ऐसी ही कहानी कश्मीर के अब्दुल समद की भी है जिन्हें सनराइजर्स हैदराबाद ने 20 लाख रुपये के बेस प्राइस पर अपने साथ जोड़ा है। कश्मीर की विपरीत परिस्थितियों में अब्दुल ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में जिस तरह अपनी जगह बनाई है, वह सराहनीय है। आईपीएल ने कई खिलाड़ियों का आर्थिक भविष्य संवारकर उन्हें आगे खेलने के लिए तैयार किया है। भारतीय क्रिकेट में दिख रही नई धार का एक कारण यह भी है। और भारत ही नहीं, वेस्ट इंडीज, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के क्रिकेटरों को भी इससे बड़ा सहारा मिला है। उम्मीद है कि इस बार भी आईपीएल अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप देश–दुनिया का मनोरंजन करेगा।

अष्टयोग-4898

1	3		4	5	7	
	25	7	32		36	
	2		6	3		4
3	31	6	32		33	
	5			1		7
5	37	5	31		30	
	5		3	2	7	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4897 का हल

4	3	2	7	6	1	5
5	33	7	35	1	28	3
1	6	5	4	3	7	2
2	35	3	35	7	32	6
7	5	6	3	4	2	1
6	33	1	31	5	30	4
3	1	4	6	2	5	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

सीएए का विरोध

उपमा सिंह। सीएए का विरोध करने वाले सुशांत सिंह को रातोंरात सावधान इंडिया के होस्ट की जिम्मेदारी से हटा दिया गया, लेकिन 'मैं टैलंट बेचता हूं, जमीर नहीं' कहने का सुशांत जैसा जिगर सभी का नहीं होता। आमिर खान ने अपनी पिछली फिल्म के रिलीज के दौरान मीटू के मुद्दे पर यही कहते हुए बात करने से मना कर दिया था कि अभी वह इस पर नहीं बोलेंगे, क्योंकि उनकी फिल्म आ रही है। दरअसल, इनटॉलरेंस पर अपनी राय रखने पर आमिर और शाहरुख भी पहले ऐसे नुकसान उठा चुके हैं, इसलिए अब वे किसी भी राजनीतिक–सामाजिक मुद्दे पर बोलने से बचते हैं। वहीं, कई कलाकारों का स्वभाव ही चारण का होता है, सत्ता के साथ उनके हित जुड़े होते हैं, वे उनके खिलाफ बोलने की जुर्रत नहीं करते। वहीं, यह सवाल उठने पर अमिताभ बच्चन, रितिक रोशन जैसे कुछ चर्चित ऐक्टर्स ने एक ट्वीट करके छात्रों पर हुई हिंसा पर दुख जताकर अपने दायित्वों की पूर्ति कर दी। लेकिन सच कहा जाए, तो दबाव के चलते दिए गए समर्थन या विरोध का कोई मतलब नहीं है। बात के मायने तभी हैं, जब वह मन से कही गई हो, इसलिए नहीं कि अरे, लोग सवाल उठा रहे हैं, तो कुछ कहना ही पड़ेगा।